

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन एवं संभावनाओं का अध्ययन

डॉ. सीमा

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा, शारदा कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी

Email: aggarwalseema091@gmail.com



Received 10 August 2026

Accepted 15 August 2026

Published 27 August 2026

Corresponding Author:

डॉ. सीमा

Email: aggarwalseema091@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/ijeagr.v1i3.16>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण नीति है। इसे 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई। इसका उद्देश्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना है जो विद्यार्थियों के ज्ञान के साथ-साथ उनकी रचनात्मकता, तार्किक चिंतन, कौशल, नैतिक मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करे। नीति में विद्यालयी शिक्षा के ढाँचे, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं, व्यावसायिक शिक्षा, मूल्यांकन, शिक्षक-प्रशिक्षण, डिजिटल शिक्षा तथा उच्च शिक्षा में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तावित किए गए हैं। इस शोध-पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताओं, इसके शैक्षिक उद्देश्यों, हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संदर्भ में इसकी उपयोगिता, शिक्षकों की भूमिका, डिजिटल शिक्षा, उच्च शिक्षा तथा इसके क्रियान्वयन से जुड़ी संभावनाओं और चुनौतियों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय शिक्षा, हिंदी, मातृभाषा, बहुभाषिकता, कौशल शिक्षा, डिजिटल शिक्षा, उच्च शिक्षा।

1. भूमिका

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और बौद्धिक विकास का प्रमुख आधार है। समय के परिवर्तन के साथ शिक्षा की आवश्यकताएँ भी बदलती रहती हैं। आज विज्ञान, तकनीक, डिजिटल माध्यम और वैश्वीकरण ने जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। ऐसी स्थिति में शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को परीक्षा के

लिए तैयार करना नहीं, बल्कि उन्हें जीवन की वास्तविक चुनौतियों के लिए सक्षम बनाना भी है। इसी दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तनकारी पहल के रूप में देखा जा सकता है। यह नीति विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक अनेक स्तरों पर सुधार की दिशा प्रस्तुत करती है। इसका जोर रटने की अपेक्षा समझ, अनुभव, कौशल, रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन पर है।

नीति का उद्देश्य भारतीय परिस्थितियों और मूल्यों से जुड़ी ऐसी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था विकसित करना है जो विद्यार्थियों को राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर की चुनौतियों के लिए तैयार कर सके। नीति निर्माण की प्रक्रिया में व्यापक परामर्श भी किया गया था।

2. शोध के उद्देश्य एवं शोध-विधि

शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
- भारतीय विद्यालयी शिक्षा पर इसके संभावित प्रभाव को समझना।
- हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संदर्भ में नीति के महत्व का अध्ययन करना।
- उच्च शिक्षा में प्रस्तावित परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- नीति के क्रियान्वयन की संभावनाओं और चुनौतियों को स्पष्ट करना।

शोध-विधि

प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधिकारिक दस्तावेज, शिक्षा मंत्रालय की सामग्री तथा संबंधित सरकारी स्रोतों को आधार बनाया गया है।

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का स्वरूप

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रावधान किए हैं। विद्यालयी शिक्षा में 5+3+3+4 की संरचना प्रस्तावित की गई है, जिसमें बच्चे की आयु और विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया है।

इसके चार चरण हैं—

आधारभूत चरण: 5 वर्ष

तैयारी चरण: 3 वर्ष

मध्य चरण: 3 वर्ष

माध्यमिक चरण: 4 वर्ष

इस व्यवस्था के माध्यम से प्रारंभिक बाल्यावस्था को औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से बेहतर ढंग से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

नीति में प्रारंभिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान को विशेष महत्व दिया गया है। यह विचार महत्वपूर्ण है क्योंकि पढ़ने, लिखने और मूलभूत गणितीय समझ की मजबूत नींव आगे की शिक्षा के लिए आवश्यक है।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रमुख विशेषताएँ

4.1 विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा

नई शिक्षा नीति में विद्यार्थी की रुचि, क्षमता और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा देने पर बल है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं बल्कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है।

4.2 अनुभवात्मक एवं गतिविधि आधारित शिक्षा: विद्यार्थियों को केवल पुस्तक आधारित ज्ञान देने के बजाय प्रयोग, गतिविधि, चर्चा, परियोजना और अनुभव के माध्यम से सीखने के अवसर उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है।

इससे विद्यार्थियों में समस्या-समाधान, रचनात्मकता और तार्किक चिंतन का विकास हो सकता है।

4.3 व्यावसायिक शिक्षा

नीति में विद्यार्थियों को प्रारंभिक स्तर से ही विभिन्न व्यावसायिक कौशलों से परिचित कराने की दिशा में प्रावधान किए गए हैं। इसका उद्देश्य शिक्षा को रोजगार और जीवन-कौशल से जोड़ना है। शिक्षा मंत्रालय की NEP पहलों में व्यावसायिक एवं कौशल-आधारित शिक्षा को भी स्थान दिया गया है।

4.4 मूल्यांकन में परिवर्तन

नई शिक्षा नीति में केवल परीक्षा के अंकों पर आधारित मूल्यांकन की अपेक्षा विद्यार्थी के समग्र विकास का मूल्यांकन करने पर बल दिया गया है।

विद्यार्थी की समझ, रचनात्मकता, कौशल, व्यवहार और समस्या-समाधान क्षमता को भी महत्व दिया जाना प्रस्तावित है।

5. मातृभाषा, भारतीय भाषाएँ और हिंदी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वपूर्ण विशेषताओं में भारतीय भाषाओं और बहुभाषिकता को महत्व देना है। नीति में प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर मातृभाषा, स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया है।

भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का साधन नहीं है, बल्कि वह समाज की संस्कृति, परंपरा और सामूहिक स्मृति को भी सुरक्षित रखती है। इसलिए भारतीय भाषाओं को शिक्षा से जोड़ना सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

हिंदी के संदर्भ में महत्व

हिंदी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। नई शिक्षा नीति के कारण हिंदी में गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री विकसित करने की आवश्यकता और बढ़ सकती है।

विशेष रूप से—

- विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की सामग्री हिंदी में तैयार करना।
- उच्च शिक्षा के लिए हिंदी में पाठ्य सामग्री विकसित करना।
- डिजिटल माध्यमों पर हिंदी सामग्री बढ़ाना।
- हिंदी साहित्य और भारतीय साहित्य को शिक्षा से जोड़ना।
- अनुवाद कार्य को प्रोत्साहित करना।
- इन क्षेत्रों में कार्य होने से हिंदी का शैक्षिक एवं ज्ञान-विज्ञान संबंधी विस्तार संभव है।

6. शिक्षक की भूमिका

किसी भी शिक्षा नीति की सफलता में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पाठ्यक्रम और शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन तभी प्रभावी हो सकता है जब शिक्षक उसके अनुरूप स्वयं को तैयार करें।

नई शिक्षा नीति में शिक्षक को केवल पाठ पढ़ाने वाला व्यक्ति न मानकर विद्यार्थी के मार्गदर्शक और सीखने की प्रक्रिया के सहयोगी के रूप में देखने की आवश्यकता है। शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। इससे वे नई शिक्षण-पद्धतियों, डिजिटल तकनीक तथा मूल्यांकन के नए तरीकों को प्रभावी ढंग से अपना सकते हैं।

शिक्षा मंत्रालय की NEP संबंधी पहलों में शिक्षक प्रशिक्षण और NISHTHA जैसी व्यवस्थाओं को भी शामिल किया गया है।

7. डिजिटल शिक्षा और तकनीकी विकास

वर्तमान समय में शिक्षा और तकनीक का संबंध लगातार मजबूत हो रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी तकनीक के प्रभावी उपयोग पर बल दिया गया है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल पाठ्य सामग्री, ई-पाठशाला, DIKSHA तथा PM e-VIDYA जैसे माध्यम शिक्षा को अधिक व्यापक बनाने में सहायक हो सकते हैं। शिक्षा मंत्रालय डिजिटल पहलों को शिक्षा तक बहु-माध्यमीय पहुँच बढ़ाने के साधन के रूप में प्रस्तुत करता है।

डिजिटल शिक्षा के प्रमुख लाभ हैं—

- विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की अध्ययन सामग्री उपलब्ध होना।
- दूरस्थ क्षेत्रों तक शैक्षिक संसाधनों की पहुँच।
- विद्यार्थियों को अपनी गति से अध्ययन करने की सुविधा।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण में तकनीक का उपयोग।
- शिक्षा में नए डिजिटल संसाधनों का समावेश।

लेकिन डिजिटल शिक्षा के सामने इंटरनेट, उपकरणों और तकनीकी सुविधाओं की असमान उपलब्धता जैसी चुनौतियाँ भी हैं।

8. उच्च शिक्षा में परिवर्तन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा को अधिक लचीला और बहुविषयक बनाने का प्रयास किया गया है।

विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने और विभिन्न विषयों के बीच अध्ययन करने की अधिक स्वतंत्रता देने की दिशा में नीति महत्वपूर्ण है।

उच्च शिक्षा से संबंधित प्रमुख प्रावधानों में—

- बहुविषयक शिक्षा
- विषय चयन में लचीलापन
- अनेक प्रवेश एवं निकास की व्यवस्था
- अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट
- अनुसंधान को प्रोत्साहन
- तकनीकी शिक्षा का विस्तार

जैसे पक्ष शामिल हैं। शिक्षा मंत्रालय ने अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट तथा Multiple Entry-Exit को NEP से संबंधित पहलों में शामिल किया है।

इस प्रकार उच्च शिक्षा को अधिक लचीला और विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने का प्रयास किया गया है।

9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति की संभावनाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अनेक सकारात्मक संभावनाएँ प्रस्तुत करती है।

पहली संभावना यह है कि शिक्षा अधिक विद्यार्थी-केंद्रित और कौशल आधारित बन सकती है। दूसरी संभावना भारतीय भाषाओं के विकास की है। तीसरी संभावना यह है कि शिक्षा और रोजगार के बीच संबंध को मजबूत किया जा सकता है। बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों को साथ लेकर चलने का अवसर दे सकती है। इससे उनकी सोच का दायरा विस्तृत हो सकता है। डिजिटल शिक्षा के विस्तार से शैक्षिक सामग्री की पहुँच भी बढ़ सकती है। इसी प्रकार अनुसंधान को बढ़ावा मिलने से उच्च शिक्षा में ज्ञान निर्माण और नवाचार की संभावनाएँ मजबूत हो सकती हैं।

10. क्रियान्वयन की चुनौतियाँ

किसी भी नीति की सफलता उसके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सामने भी कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं।

10.1 संसाधनों की उपलब्धता

नई शिक्षा व्यवस्था के लिए विद्यालयों और महाविद्यालयों में पर्याप्त आधारभूत सुविधाओं की आवश्यकता होगी।

10.2 शिक्षक प्रशिक्षण

नई शिक्षण-पद्धतियों को लागू करने के लिए शिक्षकों को पर्याप्त और निरंतर प्रशिक्षण देना आवश्यक है।

10.3 डिजिटल असमानता

सभी विद्यार्थियों के पास समान डिजिटल संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए डिजिटल शिक्षा के साथ समान अवसर सुनिश्चित करना जरूरी है।

10.4 भारतीय भाषाओं में सामग्री

यदि भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना है तो विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा और अन्य विषयों की उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री तैयार करनी होगी।

10.5 केंद्र और राज्यों का समन्वय

शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है। इसलिए नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए केंद्र और राज्य सरकारों के बीच निरंतर समन्वय आवश्यक है।

11. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य शिक्षा को केवल परीक्षा और प्रमाण-पत्र तक सीमित न रखकर विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास से जोड़ना है।

5+3+3+4 संरचना, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, बुनियादी साक्षरता, मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं को महत्व, व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, डिजिटल शिक्षा तथा उच्च शिक्षा में लचीलापन इसके महत्वपूर्ण पक्ष हैं।

हिंदी के संदर्भ में भी यह नीति विशेष महत्व रखती है। भारतीय भाषाओं में ज्ञान और शिक्षा की सामग्री उपलब्ध कराने से हिंदी के विकास और विस्तार की संभावनाएँ बढ़ सकती हैं। इसके लिए केवल हिंदी साहित्य ही नहीं, बल्कि विज्ञान, तकनीक और उच्च शिक्षा की सामग्री भी हिंदी में तैयार करना आवश्यक है। अंततः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, कौशल-आधारित और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसकी सफलता के लिए पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक, गुणवत्तापूर्ण सामग्री, तकनीकी सुविधाएँ तथा केंद्र और राज्यों के बीच प्रभावी समन्वय आवश्यक होगा।

12. संदर्भ सूची

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार — National Education Policy 2020।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार — National Education Policy 2020 Initiatives।

स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित शैक्षिक पहल।

भारत के राष्ट्रपति भवन — राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर संबोधन, 7 सितंबर 2020।

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.